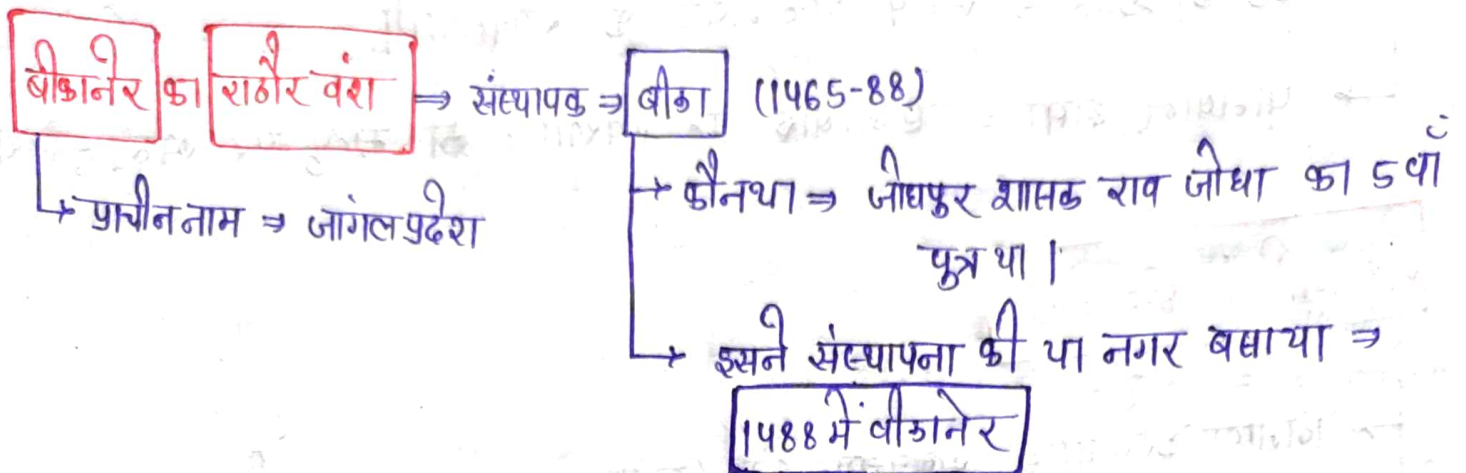


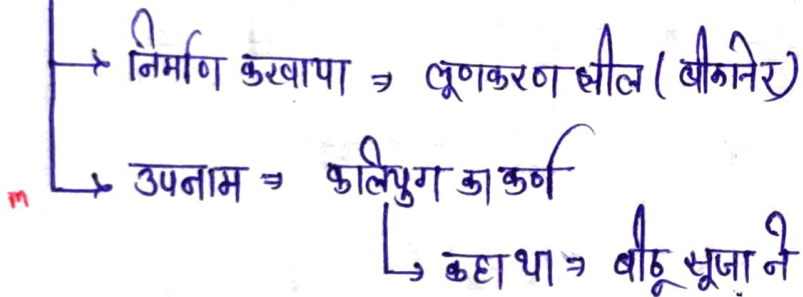
बीकानेर का इतिहास



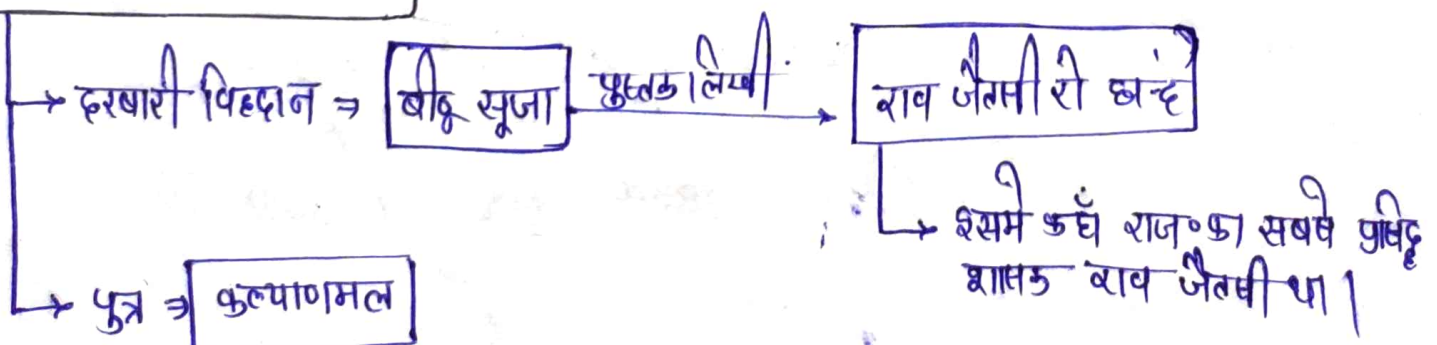
note ⇒ बीकानेर आखात्रीज (कैसाख शुम्ल III) की बसाया गया।

note ⇒ आखात्रीज की भव्य तृतीया कहते हैं। जो एक मयूझ साया है। इस दिन सर्वाधिक बाल विवाह होते हैं।

राव लूणकरण (1505-26)



राव जैतसी (1526-42)



→ पुद्दलई = 1534 - रातघाटी का पुद्दल

राव जैतसी

→ जीत

कामरान

कैन था

→ धार

यह काबुल (अफगानिस्तान) से लूट-पाट करने भागा था।

→ 1541 - पाटिया/साटिया का पुद्दल

जीधपुर शासक

राव मालदेव

→ जीत

वीगनेर का शासक

राव जैतसी

→ धार

→ मारा गया

→ साथ दिया

कल्याणमल

→ भाग कर शरण ली थी दिल्ली के सुल्तान बीरशाहपुरी के पास।

note, इस पुद्दल की जानकारी बीरू सूजा की किताब राव जैतसी रो चन्द में मिली।

कल्याणमल (1544-74)

→ शासक बना = पुद्दल के बाद =

1544 गिरीसुर्मल का पुद्दल

राव मालदेव

→ धार

बीरशाहपुरी

→ जीत

→ साथ = दिया = कल्याणमल ने

इसने 1570 = नागौर दरबार में अकबर (मुगल वंश) की अधीनता स्वीकार की।

बीकानेर का पहला राजा जिसने मुगलों / अकबर की अधीनता स्वीकार की।

2 पुत्र → रायसिंह
पृथ्वीराज राठौर → निष्कृत डिपा = अकबर की सेवा में
अकबर ने इसको दिया = गांगरीण दुर्ग (झालापाड़)
इसने पुस्तक लिखी = वैले जिसने शक्तमानी

= L.P. तैरसीधरी ने कहा "पृथ्वीराज की ~~होस~~ डिगल का हरीस"

= उपनाम = पीथल = एक साहित्यिक नाम था।

रि ख्यात
गांगरीण दुर्ग में लिखी
कनल जेम्स यॉउ ने
कहा 10,000
हाथियों के बराबर
बल था।
दुसा मादा ने कहा =
5 वां वेद 14 वा पुराण

रायसिंह (1574-1612)

उपनाम =

उपाधि = राय

= महाराजिन्द्र

= राजेन्द्र

> अकबर द्वारा दिए गए नाम थे।

स्वंप विद्यात = जिसने किताब लिखी रायसिंह महोदय
जीतिष रत्नमाला

दरबारी विद्वान = जयसीम = पुस्तक लिखी = कर्मचन्द्रवंशीकीरतमहात्म्य

इसका समकालीन बादशाह = अकबर

उपनाम = राजपूताने का कर्ण = मुशीदेवी प्रसादने कहा था।

निर्माण कराया = **जुनागढ़ दुर्ग (बीगनेर)**

- कुर्मचन्द्र ब्राह्मण की देखरेख में बनवाया था।
- राज० का एकमात्र दुर्ग जिसमें लिफ्ट लगी हुई है।
- इस दुर्ग में राधेसिंह ने जयमल-पता की गजाल कीर्तिपावनवाई।
- उपनाम = अद्यगढ़ दुर्ग

कृष्णसिंह

- उपाधि = **जांगलधर बादशाह**
- दरबारी विद्वान = गंगाधर मैथिल = फुस्तक = कर्णभूषण
- समकालीन बादशाह = शाहजहा + मउबर

1644 - मलीरी जी राउ पुद्द

कर्णसिंह → ममरसिंह
→ धार → जीत

अनूपसिंह

- उपाधि मिली = माहिभरातव
- इसके काल की बीगनेर की चित्रशैली का स्वरूपालू करते हैं।
- निर्माण कराया = 33 करोड़ 1 कोटि के देवी-देवताओं का मंदिर (बीगनेर)
- दरबारी विद्वान = **मावभट्ट** → फुस्तक लिखी → अनूपसंगीतसर
- अनूपसंगीतरत्नाकर

सूरतसिंह

- इन्होंने जीता = अपने दुर्ग जो 1805 में मंगलवार को जीता था जिसके कारण नया नाम
- यह बीगनेर का पहला शासक जिसने 1818 में अंग्रेजी से संधि की → हनुमानगढ़

गंगासिंह (1887 - 1943)

- निर्माण = गंगा सिंहाला = क्या थी = ऊपर की सीमा थी
- कुरवी माता मंदिर = इसका अधुनेक निर्माण कराया
- गोगामेडी (हनुमानगढ़) = इसका — ॥ — ॥ — ॥

निर्माण = गंगानहर
उपनाम = माधुनेक भारत
का आगीरप
वापुलसिंह = आनंदमहासह